विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -२८ -०६ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -१०- शक्ति और क्षमा के बारे में अध्ययन करेंगे।

शक्ति और क्षमा पाठ-सार

इस पाठ में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित 'कुरुक्षेत्र' काव्य से संकलित कवितांश है। इसमें क्षमा, दया, सहनशीलता आदि गुणों का महत्त्व बताया गया है। परन्तु इन गुणों का आदर तभी होता है, जब उस व्यक्ति में शक्ति एवं साहस हो।

सप्रसंग व्याख्याएँ

(1) क्षमा, दया, तप ..... उतना ही।

कठिन शब्दार्थ-नर व्याघ्र = बाघ के समान शक्तिशाली और चालाक व्यक्ति। सुयोधन = दुर्योधन। रिपु = शत्रु। समक्ष = सामने। विनत = विनम्र।

प्रसंग-यह पद्यांश 'शक्ति और क्षमा' पाठ से लिया गया है। यह रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित है। महाभारत के युद्ध के बाद भीष्म पितामह युधिष्ठिर को समझाते हैं। यह. उन्हीं का कथन है।

व्याख्या-भीष्म पितामह ने कहा कि हे युधिष्ठिर! तुमने कौरवों को शान्त करने के लिए क्षमा, दया, तप, त्याग और मनोबल आदि सब का सहारा लिया, अर्थात् हर तरीके से उन्हें शान्त कराना चाहा, परन्तु हे शक्तिशाली युधिष्ठिर! तुमसे दुर्योधन कहाँ हारा, वह कब शान्त हो सका? भाव यह है कि वह तो सदा ही तुमसे चालाकी दिखाकर जीतता रहा। तुम अपने शत्रु दुर्योधन के सामने क्षमाशील बनकर जितना ही विनम्र आचरण करते रहे, दुष्ट कौरवों ने तुमको उतना ही कायर या कमजोर समझा। अर्थात् तुम्हारी विनम्रता को तुम्हारी कमजोरी समझा और वे तुम्हें सदा दबाते रहे।

(2) क्षमा शोभती उस ..... प्यारे-प्यारे।

कठिन शब्दार्थ-शोभती = शोभा देती है। भुजंग = सर्प। गरल = विष। विनीत = विनम्र। पंथ = रास्ता। रघुपति = श्रीराम। सिन्धु = समुद्र। अनुनय = विनती, प्रार्थना या खुशामद।

प्रसंग–यह पद्यांश 'शक्ति और क्षमा' पाठ से लिया गया है। इसके रचयिता रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं। भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहने लगे कि शक्तिशाली व्यक्ति को ही क्षमाशील होना चाहिए।

व्याख्या-शक्तिशाली एवं पराक्रमी व्यक्ति किसी को क्षमा करे, तो उससे उसकी शोभा बढ़ती है, परन्तु जिसके पास शक्ति नहीं है, वह किसी को क्या क्षमा करेगा? जैसे जिस सर्प के पास विष है, यदि वह अपनी शक्ति का अर्थात् विष का प्रयोग नहीं करे, तो उसका महत्त्व बढ़ जाता है। परन्तु जिसके पास न तो दाँत हों, ने विष हो, केवल विनम्र और सरल स्वभाव का हो, उसका क्षमाशील होने से क्या लाभ है?

श्रीराम समुद्र के किनारे तीन दिन तक खड़े रहकर सागर से पार जाने का रास्ता माँगते रहे, वे उसकी खुशामद में प्यारे-प्यारे वचन बोलते रहे, अर्थात् पूरी विनम्रता दिखाते रहे, परन्तु समुद्र ने अनसुनी कर दी।